International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 27-02-2023, Accepted: 14-03-2023, Published: 29-03-2023
Volume 9, Issue 2, 2023, Page No. 23-24

योग दर्शन के परिप्रेक्ष्य मे पुरूष और पुरूषार्थ की अवधारणा

गायत्री प्रजापति
एम.एस.सी, उत्तरार्थ योग शिक्षा विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश, भारत

सारांश
योग दर्शन मे प्रकृति और पुरूष दो तत्वो की प्रमुख रूप से व्याख्या की गई है जिसमे पुरूष तत्व को चैतन्य और प्रकृति को जड कहा है। योग दर्शन मे पुरूष, पुरूषार्थ, पुरूषशून्यता का वर्णन चक्रव्यूहवाद मे ही हो जाता है इन चार चक्रो मे पुरूष दुखो से मुक्ति पा लेता है। पुरूष अविद्या के कारण संसार के माया जाल मे फंस जाता है इस माया जाल से निकल कर कैवल्य प्राप्ति तक के उपाय का वर्णन योग सूत्र मे है।

मूल शब्दः योग, पुंरूष, पुरूषार्थ, अविद्या

योग दर्शन का मूल ग्रंथ योग सूत्र है जिसके प्रणेता महर्षि पतंजलि है, इसमे चार अध्याय है जिसमे 195 सूत्र है। महर्षि पतंजलि ने यत्र–तत्र बिखरे हुए ज्ञान को एक सूत्र मे पिरोने का काम किया डॉ. भण्डारकर जी ने पतंजलि का समय 158 ई.पू. माना है तो योग सूत्र का समय भी यही हुआ। योग सूत्र मे राजयोग, अष्टांगयोग, क्रियायोग आदि का वर्णन है साथ ही पुरूष, प्रकृति, आत्मा, चित्त वृत्ति निरोध, कैवल्य प्राप्ति का मार्ग बताया है। इसमें पुरूष को द्रष्टा के रूप में बताया है साथ ही पुरूष जो मोक्ष प्राप्ति के लिए साध्य है उससे मनुष्य कैसे पुरूषार्थ को प्राप्त कर कैवल्य प्राप्त कर सकता है उसका मार्ग बताया है, पुरूष और पुरूषार्थ की विस्तार से व्याख्या की गई है। योग की उत्पत्ति सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही हुई क्योकि प्रथम वेद ऋग्वेद मे योग का वर्णन मिलता है जिसमे कहा गया है–

हिरण्यगर्भो समवर्तताग्रे भूतस्य जातः परितेक आसीत्।
स दाधार पृथ्वी द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविशा विधेमा।।

ऋग्वेद के अनुसार हिरण्यगर्भ ही सबसे पहले अवतरित इनसे ही योग की उत्पत्ति हुई और यही संपूर्ण विश्व के अधिपति है।
याज्ञवल्क्य स्मृति मे योग के प्रथमवक्ता के बारे मे कहा है –

हिरण्यगर्भो योगस्य वक्ता नान्यः पुरातनः।। 2/5

यहा भी योग के प्रथम वक्ता हिरण्यगर्भ को बताया है।
महाभारत मे कहा है –

सांख्यस्य वक्ता कपिलः परमर्षिः स उच्चयते।
हिरण्यगर्भो योगस्य वक्ता नान्यः पुरातनः।। 12/349/65

अर्थात् योग के आदि प्रवक्ता हिरण्यगर्भ है और सांख्य के कपिल है।
इसके अलावा हठ योग के अनुसार योग के प्रवर्तक आदिनाथ भगवान शिव है। सिन्धु घाटी सभ्यता की खुदाई मे कुछ ऐसी आकृतिया प्राप्त हुई जो योग की आकृतिया थी इसलिए कुछ विद्वान योग की उत्पत्ति सिन्धु घाटी सभ्यता से भी मानते है।
योग का सामान्य शब्दो मे अर्थ मिलना, जोडना, मिलाना है लेकिन पाणिनी संस्कृत व्याकरण के अनुसार युज् धातु से योग शब्द की उत्पत्ति हुई है युज् की तीन धातुए है तीनो के अर्थ अलग अलग है।

युज् समाधौ–समाधि
यजिर् योगे–संयोग, मेल या एकत्व होना
युज् संयमने–संयमन या नियमन

पुरूष
महर्षि पतंजलि ने प्रकृति और पुरूष को दृश्य और द्रष्टा के रूप मे बताया है और योग दर्शन के ये आधारभूत तत्व है। योग दर्शन मे पुरूष को आत्मा या जीवात्मा की संज्ञा दी है, महर्षि पतंजलि के अनुसार–

योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः। 1/2
तदा द्रष्टुः स्वरूपेवस्थानम्। 1/3

जब चित्त की वृत्तियो का निरोध हो जाता है, चित्त की वृत्तियो से तात्पर्य–प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा, स्मृति से है। जब चित्त की इन वृत्तियो से हटकर अपने स्वरूप मे स्थिर हो जाता है और वह अपने स्वरूप को जान लेता है तो यह योग की अवस्था है।

द्रष्टा द्रशिमात्रः शुध्दोपि प्रत्ययानुपश्यः। 2/20

महर्षि पतंजलि ने द्रष्टा के रूप मे पुरूष की व्याख्या की है द्रष्टा अर्थात् जो देखने की शक्ति है, निर्विकार होता हुआ भी चित्त की वृत्तियो के अनुसार देखने वाला है। पुरूष जो द्रष्टा है, चैतन्य है, क्रियारहित है, अपरिणामी है, पुरूष का कारण चित्त है जो उसको सब दिखाता है। पुरूष ज्ञान का स्वरूप है चेतन पुरूष बुध्दि के समान रूप वाला नही है और न ही यह अत्यंत विरूध्दरूप वाला है यह पुरूष बुध्दि से विलक्षण है, क्योकि बुध्दि विषय की ज्ञाता होने से परिणामी है लेकिन पुरूष ज्ञाता न होने की वजह से अपरिणामी है।

द्रष्टा द्रश्ययो संयोगो हेय हेतुः।। 2/17

द्रष्टा और द्रष्य का संयोग अर्थात प्रकृति और पुरूष के संयोग को दुःख का कारण कहा है क्योकि प्रकृति का भोग पुरूष करता है प्रकृति में उत्पन्न त्रिगुणात्मक पदार्थो को भोगता है पुरूष के अंदर सत्, रज, तम, गुण होते है इंद्रिया होती है जिनसे पुरूष में अहंकार उत्पन्न है संयोग का कारण अविद्या है पुरूष इसी अविद्या के कारण खुद को कर्ता–भोक्ता समझने लगता है। आत्मा

को परमात्मा से भिन्न समझने लगता है। योग दर्शन मे पुरूष को योग के लिए साधन माना है जो कैवल्य प्राप्त कर सकता है जिसके लिए महर्षि पतंजलि ने अष्टांग योग भी बताया है लेकिन पुरूष तो अविद्या के कारण संसार के मायाजाल में फंस जाता है जो खुद को अहंकारी समझने लगता है कर्म अपने स्वार्थ के लिए करता हे जो उसके संस्कार का कारण बनते है और इस जन्म मरण के बंधन में फंसा रहता है जबकि पुरूष का कार्य निष्काम कर्म करना और कैवल्य प्राप्ति के लिए साधना करना है। आगे महर्षि पतंजलि कहते हैः–

तदर्थ एवं द्रश्यस्यात्मा। 2/21

उस पुरूष या द्रष्टा के लिये ही यह द्रश्य अर्थात् प्रकृति का स्वरूप है कहने का तात्पर्य यहा यह कि प्रकृति की जो वस्तुये है वह पुरूष के भोग या अपवर्ग के लिए ही है जैसे जब एक बछडा पैदा होता है तो उसके बडे होने की आशा इसलिए होती है कि उससे दूध प्राप्त होगा ठीक उसी प्रकार पुरूष के मोक्ष के लिये प्रधान की प्रवृत्ति होती है यह गुणवती प्रकृति गुणरहित पुरूष के लिए निःस्वार्थ काम करती है ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार परोपकारी पुरूष भले सबका भला करते है बिना अपना कोई स्वास्थ देखे यहा पुरूष का अर्थ प्रयोजन,भोग अपवर्ग पुरूष प्रयोजन को साधकर द्रश्य नष्ट हो जाता है क्या हेसा हो सकता है घनही क्योकि

कृतार्थ प्रति नश्टमप्यनष्टं तदन्यसाधारणत्ववत्।। 2/22

अर्थात् जिसका प्रयोजन सिध्द हो गया हो उसके लिये यह दृश्य नष्ट हुआ भी नष्ट नही होता क्योकि वह दूसरे पुरूषो के साथ साझे की वस्तु है।

यहा कहने का तात्पर्य यह है कि पुरूष का प्रयोजन सिध्द हो गया अर्थात् वह कैवल्य प्राप्ति के मार्ग पर है और वह अपने स्वरूप को आत्मस्वरूप को समझ गया वह मोह रूपी बंधन से मुक्त हो गया तो प्रकृति के होने या ना होने पर भी पुरूष को कोई फर्क नही पडेगा यह प्रकृति को कोई और भोग करेगा। लेकिन पुरूष को इससे फर्क नही पडेगा प्रकृति है या नही और और प्रकृति दूसरो के प्रयोजन को साधने में लग जाती है। पुरूष शब्द के यहॉ अर्थ चित्त तत्व जीवात्मा के रूप में लिये गये है, जीवात्मा का प्रयोजन भोग करने के पश्चात् अपने कारण में लीन हो जाना जीवात्मा की मुक्ति कही जाती है। चित्त पुरूष का यह दृश्य रूप है वही वृप्ति रूप से अन्य सब दृश्यो को पुरूष को बोध कराने का साधन है, अर्थात् पुरूष जब अपने रूप को जान लेता है अपने स्वरूप मे स्थित हो जाता है दृश्य (प्रकृति) का उसके लिए कोई प्रयोजन नही रहता तब कैवल्य प्राप्त करता है।

पुरूषार्थ

पुरूषार्थ का अर्थ है पुरूष के प्रति महर्षि पतंजलि कहते है –

प्रकाशक्रियास्थितिशीलं भूतेन्द्रियाताकं भोगायवर्गाथं दृश्यम्। 21/8

पुरूषार्थ को धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के आधार पर चतुष्टय कहा है पुरूषार्थ के प्रक्रिया में शुभ–अशुभ कर्मो का अविद्या, क्लेश, विभिन्न प्रकार की वासनाए चित्त का आश्रय रहता है विषय और इंद्रियो की सहायता से चित्त ही भोग हेतु पुरूषार्थ करता है पुरूषार्थ प्रकृति के मार्ग में अवरोध नही है बल्कि अवरोधो का उन्मूलक है।।

स्वस्वानिशक्तयोः स्वरूपोपलब्धिहेतुः संयोग।

बुध्दि और आत्मा का संयोग पुरूषार्थ का हेतु है और महर्षि पतंजलि कहते है कि पुरूष जो खुद को कर्ता समझता है वह तो कर्म से अलिप्त है संपूर्ण कर्म तो प्रकृति के गुणो द्वारा किये जाते है और पुरूषार्थ पुरूष की इस मिथ्या का समाधान विवेकख्याति द्वारा होता है, संयम अर्थात् धारणा, ध्यान समाधि के द्वारा पुरूषार्थ के पार जाया जा सकता है। पुरूषार्थ में अभ्यास एवं बिना प्रयत्न के कैसे साधक बन सकतें है।

हेयं दुःखमनागतम्।। 2/16

भूतकाल अर्थात भविष्य में जो आने वाला दुख है त्यागने योग्य है विवेकख्याति इस दुख को हटाती है। तृष्णा, इच्छा ही दुख का कारण होती है और साधक जब अपनी साधना में लग जाता है तो वह इस प्रपंच से दूर रहता है सांसारिक लोगो से दूर रहता है और पुरूषार्थ को प्राप्त करता है। दुखनिवृत्ति भी पुरूषार्थ हो सकती है जब पुरूष के चित्त में भोग का भाव नही रहेगा तो दुख से निवृत्ति निश्चित है और जब भोग नही होगा तो कर्म संसकार भी नही बनेगा तो यह अवश्य ही पुरूषार्थ होगा। चतुर्व्यूहवाद की विवेचना में भी पुरूषार्थ प्रकट होता है।

योग सूत्र में पुरूषार्थ को जीवन के प्रयोजन या लक्ष्य से लिया है और पुरूष के जीवन का प्रयोजन या लक्ष्य तो कैवल्य की प्राप्ति है–

पुरूषार्थशून्यानां गुणानां प्रतिप्रसवः कैवल्यं स्वरूप प्रतिष्ठा वा चितिशक्तिरिति।। 4/34

प्रत्येक पुरूष का यह कर्त्तव्य बनता है कि वह अपने जीवन के नौतिक मूल्यो पुरूष चतुष्टय का पालन करे।

हम यह पहले भी देख चुके है कि पुरूष का अपने स्वा में स्थित हो जाना वृत्तियो का निरोध हो जाना पुरूषार्थ है और यह पुरूषार्थ जब शून्य रहित हो जाता है तो वह कैवल्य मुक्ति की अवस्था है वह अपने वास्विक स्वरूप में प्रतिष्ठित होने पर परमानंद की स्थिति को प्राप्त हो जाता है इस अवस्था में सभी वृत्तियो का सर्वथा के लिए निरोध हो जाता है क्लेश समाप्त हो जाते है।

निष्कर्ष

पुरूष और पुरूषार्थ की अवधारणा को जानने का उद्देश पुरूष से पुरूषार्थ कैसे प्राप्त करे इसे जानना था। कैसे हम मोक्ष प्राप्त कर सकते यह जानना था। लगभग सभी दर्शनो में मोक्ष की बात की गई है,और योग दर्शन में प्रकृति और पुरूष के दो तत्वो को माना है इनमें चेतन तत्व पुरूष को माना है जिससे पुरूषार्थ तक की चेतन यात्रा होती है जो समस्त दुखो, अविद्या क्लेशो से युक्त होकर आत्मा से परमात्मा का संयोग कराती है।

यह सारा कर्म संयोग कराती है। यह सारा कर्म पुरूषार्थ आत्मा की मुक्ति के सापेक्ष है।

संदर्भित ग्रंथ सूची

1. ग्रन्थकार श्री स्वामी ओमानंद तीर्थ, चालीसवॉ पुनर्मुद्रण पातज्जलयोगप्रदीप, गीताप्रेस गोरखपुर
2. व्याखाकार स्वामी हरिहरानंद आरण्य (2014) संपादक डॉ. रामशंकर भट्टाचार्य मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली
3. डॉ. पु.वि.करंबेलकर, 2005 पातंजल योगसत्र कैवल्यधाम लोणावला, महाराष्ट्र
4. डॉ. संगीता सिंह विद्यालंकार,2008 सांख्य – योग दर्शन सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली भारत
5. डॉ. विजयपाल शास्त्री, 2006 योगविज्ञानप्रदीप गुरूकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
6. उर्मिला पाण्डे,2014 योग दर्शन के परिपेक्ष्य में पुरूष,पुरूषार्थ एवं पुरूषार्थशून्यता Dev Sanskarti: Interdisciplianry International Jounral, 2014